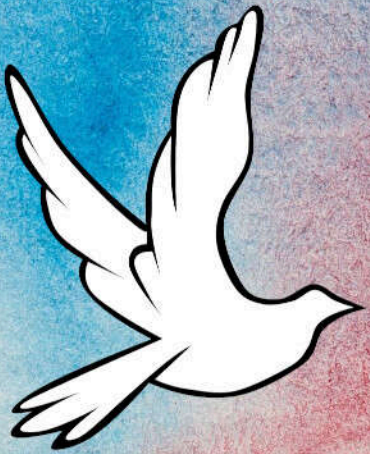

सलामती

का

शहज़ादा

सलामती

का

शहज़ादा

salāmatī kā shahzādā

Prince of Peace
(Urdu—Hindi script)

© 2019 MIK
published and printed by
Good Word, New Delhi

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

सुकूनो-इतमीनान क्यों नहीं मिलता?

मौजूदा ज़माने में कहीं भी अमनो-अमान नहीं। हर तरफ़ फ़सादी और जंग के बादल छाए हुए हैं। अक़वामे-मुत्तहिदा और तमाम दीगर कोशिशों के बावुजूद अमनो-अमान कम ही पाया जाता है। अपने मुल्क और अपनी हालत पर ही ग़ौर करें। हर वक़्त जंग के बादल मंडलाते नज़र आते हैं। हर शख़्स परेशान है। अख़बार डाके, चोरी-चिकारी, क़त्लो-ग़ारत और दीगर बुरी ख़बरों से भरे रहते हैं। मुआशरा ज़वालपज़ीर क्यों है? इनसान का दिल हक़ीक़ी इतमीनान से क्यों आशना नहीं? वह क्यों हर वक़्त बेक़रार रहता है?

दिल की लाइलाज हालत

कलामे-इलाही ने इसकी वजह बताई है : गुनाह ही इनसान को किसी पल चैन नहीं लेने देता,

> दिल हद से ज़्यादा फ़रेबदेह है, और उसका इलाज नामुमकिन है। कौन उसका सहीह इल्म रखता है? (सहायफ़े-अंबिया, यरमियाह 17:9)

हज़रत ईसा ने फ़रमाया,

> जो कुछ इनसान के मुँह से निकलता है वह दिल से आता है। वही इनसान को नापाक करता है। दिल ही से बुरे ख़यालात, क़त्लो-ग़ारत, ज़िनाकारी, हरामकारी, चोरी, झूटी गवाही और बुहतान निकलते हैं। (इंजील जलील, मत्ती 15:18-19)

जब तक इनसान के दिल की हालत दुरुस्त नहीं होती उस वक़्त तक न तोउस की अपनी ज़िंदगी में अमन क़ायम हो सकता है और न मुआशरे में। इनसान का दिल उसकी हरकतों को कंट्रोल करता है। अगर दिल दुरुस्त हो तो काम भी दुरुस्त होगा।

लेकिन इनसान के लिए अपने दिल को दुरुस्त बनाना नामुमकिन है। इसकी वजह यह है कि वह गुनाहगार है। गुनाह उसकी सरिश्त में इस क़दर रचा बसा है कि वह नेक काम कर ही नहीं सकता। आप

अपनी ही ज़िंदगी में भी इसका मुशाहदा कर सकते हैं कि आपका दिल गुनाह की तरफ़ ज़्यादा मायल रहता है। इंजील जलील फ़रमाती है,

> हम जानते हैं कि शरीअत रूहानी है। लेकिन मेरी फ़ितरत इनसानी है, मुझे गुनाह की ग़ुलामी में बेचा गया है। दर-हक़ीक़त मैं नहीं समझता कि क्या करता हूँ। क्योंकि मैं वह काम नहीं करता जो करना चाहता हूँ बल्कि वह जिससे मुझे नफ़रत है।
> (इंजील जलील, रोमियों 7:14-15)

अपना इलाज नामुमकिन

लेकिन इससे बढ़कर अलमिया यह है कि इनसान के पास इसका इलाज नहीं। इनसान अपनी गुनाहगारी का इलाज ख़ुद नहीं कर सकता। पाक सहायफ़ में मरक़ूम है,

> क्या काला आदमी अपनी जिल्द का रंग या चीता अपनी खाल के धब्बे बदल सकता है? हरगिज़ नहीं! तुम भी बदल नहीं सकते। तुम ग़लत काम के इतने आदी हो गए हो कि सहीह काम कर ही नहीं सकते। (यरमियाह 13:23)

ग़रज़ कलामे-इलाही और इनसान का अपना तजरबा शाहिद हैं कि इनसान अपने गुनाह का इलाज ख़ुद नहीं कर सकता। लेकिन शुक्र है कि बारी तआला ने वह कुछ किया जो इनसान से नामुमकिन था। अल्लाह तआला इब्तिदा ही से इनसान की हालत से आगाह था। इसलिए उसने अपनी रहमत और फ़ज़ल से गुनाहगार इनसान को बचाने का इंतज़ाम किया।

सलामती के शहज़ादे की पेशगोई

अल्लाह तआला ने इस इंतज़ाम को ब-यकवक़्त दुनिया पर ज़ाहिर न किया बल्कि रफ़्ता रफ़्ता। फिर अंबियाए-कराम की मारिफ़त उसके बारे में क़दरे विज़ाहत से बताया। हज़रत यसायाह नबी फ़रमाते हैं,

> हमारे हाँ बच्चा पैदा हुआ, हमें बेटा बख़्शा गया है। उसके कंधों पर हुकूमत का इख़्तियार ठहरा रहेगा। वह अनोखा मुशीर, क़वी ख़ुदा, अबदी बाप और सुलह-सलामती का शहज़ादा कहलाएगा। (सहायफ़े-अंबिया, यसायाह 9:6)

सलामती के शाहज़ादे की आमद

सलामती के इस शहज़ादे के बारे में यह वादा तक़रीबन दो हज़ार साल पहले पूरा हुआ जब हज़रत ईसा इस जहान में तशरीफ़ लाए। फ़रिश्ते ने उनकी आमद का मक़सद बताकर फ़रमाया,

> उसके बेटा होगा और उसका नाम ईसा रखना, क्योंकि वह अपनी क़ौम को उसके गुनाहों से रिहाई देगा। (इंजील जलील, मत्ती 1:21)

गुनाह अल्लाह तआला की पाक ज़ात के ख़िलाफ़ होता है, इसी लिए गुनाह की सज़ा मौत है। लिखा है

> गुनाह का अज्र मौत है (इंजील जलील, रोमियों 6:23)

अब चूँकि तमाम इनसान गुनाहगार हैं इसलिए सबके सब मौत के सज़ावार हैं। लिखा है कि

> जब आदम ने गुनाह किया तो उस एक ही शख़्स से गुनाह दुनिया में आया। इस गुनाह के साथ साथ मौत भी आकर सब आदमियों में फैल गई, क्योंकि सबने गुनाह किया। (इंजील जलील, रोमियों 5:12)

लेकिन बारी तआला हमसे मुहब्बत रखता है। वह नहीं चाहता कि इनसान हलाक हो। इसलिए उसने हज़रत ईसा को इस जहान में भेजा ताकि वह हर एक इनसान के गुनाह का कफ़्फ़ारा दें।

> यही मुहब्बत है, यह नहीं कि हमने अल्लाह से मुहब्बत की बल्कि यह कि उसने हमसे मुहब्बत करके अपने फ़रज़ंद को भेज दिया ताकि वह हमारे गुनाहों को मिटाने के लिए कफ़्फ़ारा दे।
> (इंजील जलील, 1 यूहन्ना 4:10)

उन्होंने अपनी सलीबी मौत के ज़रीए यह कफ़्फ़ारा दिया।

> अल्लाह ने ईसा को उसके ख़ून के बाइस कफ़्फ़ारा का वसीला बनाकर पेश किया, ऐसा कफ़्फ़ारा जिससे ईमान लानेवालों को गुनाहों की माफ़ी मिलती है। यों अल्लाह ने अपनी रास्ती ज़ाहिर की।
> (इंजील मुक़द्दस, रोमियों 3:25)

सलामती का हुसूल

अब जो कोई इस कफ़्फ़ारे को सच्चे दिल से क़बूल कर ले उसे माफ़ी हासिल होगी। तब वह मौत के बाद जन्नत में दाख़िल होगा।

ऐसे लोगों के दिलों में रूहुल-क़ुद्स आकर सुकूनत करने लगता है, और उनके दिल नए बन जाते हैं। बेशक अब भी उनसे गुनाह सरज़द होते हैं, लेकिन अब वह गुनाह से नफ़रत करते हैं। वह हर वक़्त इस कोशिश में होते हैं कि किसी तरह हक़ तआला को ख़ुश करें। अब उन्हें अल्लाह का इतमीनान हासिल है। यह है वह हक़ीक़ी इतमीनान जो दुनिया में अमनो-अमान पैदा करता है।

अब क्रिसमस की आमद है। तमाम दुनिया में उस सलामती के शहज़ादे की ईदे-विलादत बड़ी धूमधाम से मनाई जाएगी। ख़ुदा करे कि लोग उनकी आमद के मक़सद को अपनी ज़िंदगियों में पूरा होने दें। तब ही वह हक़ीक़ी अमनो-अमान से वाक़िफ़ हो जाएँगे।